2. प्रेम माधुरी : श्रीकृष्णावतार में प्रेम माधुर्य अपनी परमचरम सीमा पर था। श्रीकृष्ण के प्रेम का रसास्वादन लता, पता, वृक्ष, पशु, पक्षी, मैया, नंदबाबा, ग्वाल बाल, गोप, गोपी सब ने किया। कुबरी से लेकर रानीयों तक माधुर्य रस उढेल दिया। निष्काम गोपियों को तो महाभाव कक्षा का अंतिम रस पिलाया।

जो भगवान ग्यानियों की समाधी में स्वामी बनकर, बुलाने पर भी नही जाता, वो भगवान प्रेम के वशीभूत होकर गोपियों की दासता करता है। खेल में हारने पर सखाओं का घोडा बनता है। यशोदा मैया के आँगन में कीचड में विहार करता है।

जो भगवान मंदिरों में वेद मंत्रों से बडे बडे विद्वानों द्वारा की स्तुती सुनकर भी एक शब्द बोलने के लिए राजी नही होता, वो भगवान गाय के बछडों को चुमकर प्यार से पूछता है, "दुध पीना है? तुमको छोड दूँ? जा। जा कर अपनी मैया का दुध पी ले।"

जिन भगवान का नाम ही संसारिक दुःख मृत्यु आदि के भवबंधन से छुटकारा दिलाता है, उस भगवान को यशोदा मैया ऊखल में बांध देती है। जिन भगवान के डर से महाकाल भी थरथर काँपता है, जिसके भृकुटी विलास से प्रलय हो जाता है, वो भगवान यशोदा मैया के पतले डंडे डर कर रोने लगता है।

जिसकी माया चराचर जीव ही नही बल्कि विधी, हरि, हर को भी बंदर की तरह नचाती है, उस भगवान को गोपिया थोडे से छाछ के लिए नचाती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जो भगवान अनंत सुख सागर है, वो भगवान वृषभानुनंदिनी श्रीराधा को रो रो कर, अनेक प्रकार के प्रयास कर के मनाता है। राधा के चरण दबाता है।

ये सब दिव्य प्रेम का परिणाम है जो जीव को अंतःकरण शुद्ध होने पर ईश्वर कृपा से मिलता है।

3. लीला माधुरी : नटवर नागर श्रीकृष्ण ने प्रचुर मात्रा में लीलाएँ की है। पैदा होते ही नाटक शुरु कर दिया। फिर राक्षसों का

संहार, कालिया दमन, गोवर्धन धारण, चीर हरण, धेनु चरावन, माखन चोरी, महारास लीला ऐसी अनेकोनेक लीलाएँ की है। प्रेम भरी लीला वैसे देखा जाय तो दो ही अवतारों में है एक श्रीराम और दूसरा श्रीकृष्ण।

लेकिन रामावतार की लीला मर्यादा युक्त है। एक शूर्पणखा श्रीराम की ओर आकृष्ट हो गयी तो उसकी नाक कटवा दी। कोई ऐसा सखा या सखी है जिसके गले मे हाथ डाल कर रामजी ने प्यार किया हो? कृष्णावतार की लीला में मर्यादा का कोई नामो निशान नही। माधुर्य ही माधुर्य है। मधुराधी पते अखिलम् मधुरम्।

4. मुरली माधुरी : श्रीकृष्ण की मुरली धुनी में इतना जादुभरी मधुरता है कि जो भी सुनता है वो श्रीकृष्ण की ओर खींचा चला आता है। गाय चरना भूल जाती है, बछडे दुध पीना छोड देते है, हिरन, मोर आदि पशु पक्षी दौडे चले आते है। वृक्ष , लता रोमांचित हो जाते है। शंकरजी अपनी समाधी भूल जाते है। गोपिया लोक लाज, कुल की मर्यादा, वेद धर्म सब का परित्याग कर के श्रीकृष्ण के पास पहुँच जाती है। इस मुरली धुनी को सुनने का भाग्यशाली कोई विरला ही होता है।